कलीसिया अध्याय 3

1.	**प्रार्थना**

समूह अगुवा। परमेश्वर की आत्मा द्वारा अगुवाई पाने, उसकी उपस्थिति के प्रति संवेदनशीलता तथा उसकी आवाज सुनने के लिए **प्रार्थना** करे।

अपने समूह तथा कलीसिया निर्माण करने के सम्बन्ध में इस अध्याय को परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

2.	**बाँटना** (20मिनट) *[शान्त समय]* **मरकुस 8:1-11:19**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में **साझा करें** कि आपने दिये गये अनुच्छेद (मरकुस 8:1-11:19) में शान्त समय में क्या सीखा।

अगर कोई व्यक्ति अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3.	**याद करना** (5 मिनट) *[मसीह चरित्र]* **(3) मरकुस 12:30-31**

दो दो करके पुनरावलोकन करें।

(3)प्रेम : मरकुस 12:30-31। तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन से और अपने साथ प्राण से और अपनी सारी बुद्धि से और अपनी सारी शक्ति से प्रेम रखना। और दूसरी आज्ञा यह हे कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना:इसे से बड़ी और कोई आज्ञा नहीं।

4	**बाइबल अध्ययन** (85मिनट) *[कलीसिया का पर्व]* **गुड फ्राइडे:मसीह की मृत्यु का स्मरणोत्सव**

परिचय। गुड फ्राइडे मसीहियों का वह पर्व है जिसमें मसीही लोग यीशु मसीह की मृत्यु का स्मरणोत्सव मनाते हैं। हम सीखेगें कि संसार भर के पापों के लिए यीशु की मृत्यु के बारे में बाइबल क्या शिक्षा देती है। हम सीखेगें कि उसकी मृत्यु के बारे में किस प्रकार से पुराने नियम में भविष्यद्वाणियां की गयी थीं, उसके क्रूस पर मरने से क्या हुआ और क्रूस पर उसकी मृत्यु हमारे लिए क्यों महत्वपूर्ण है।

यहूदी कलैण्डर में, यह शुक्रवार,बृहस्पतिवार को सूर्य ढलने पर प्रारम्भ हुआ और शुक्रवार को सूर्य ढलने पर खत्म हुआ। यीशु मसीह के साथ विश्वासघात हुआ,नालिश हुई,क्रूस पर चढ़ाया गया, मरा और शुक्रवार को ही दफन हुआ। ऐतिहासिक तौर पर हम मसीही लोग उस शुक्रवार को 'अच्छा' कहते हैं,क्योंकि इस दिन यीशु मसीह ने हमारे पापों के बदले मृत्यु सहकर हमारे दण्ड को अपने ऊपर ले लिया और जिसका परिणाम हमारा उद्धार हुआ,वही हमारे जीवन के लिए इससे बेहतर और कुछ हो नहीं सकता। हालांकि वह शुक्रवार सभी चेलों के लिए बहुत दु:खदायी दिन था,लेकिन वही दिन यीशु के पुनरूत्थान के बाद आनन्द का दिन बन गया। यीशु मसीह की मृत्यु मानवजाति के इतिहास में सबसे महत्वपूर्ण घटना का एक हिस्सा थी, खास तौर पर यीशु मसीह के प्रथम आगमन,उसका जीवन, उसकी मृत्यु और उसका पुनरूत्थान का।

इतिहास की कोई भी घटित घटना, कोई भी ऐसा कारनामा जो किसी किताब, पत्रिका या समाचार पत्र में छपा हो, कोई ऐसी खबर जो रेडियो, टेलीविजन या किसी और प्रसारण माध्यम से प्रसारित किया गया हो, इतना महत्वपूर्ण या प्रभावशाली नहीं है जितनी यीशु की मृत्यु व उसका पुनरूत्थान।

क. यीशु मसीह की मृत्यु से जुड़ी भविष्यद्वाणियां

1. गिनती 21 पुराने नियम में यीशु मसीह की मृत्यु का ही एक प्रारूप है।

(1) गिनती 21:4-9

करीब 1400 ई.पू., हम इस्राएली लोग धीरज खो बैठे और उन्होंने परमेश्वर व मूसा के विरूद्ध बोलने लगे। वे अपनी कठिन परिस्थितियों के लिए शिकायत करने लगे खास तौर पर मरूस्थल में मजबूरी में खाये जाने वाले भोजन के लिए। परमेश्वर ने उनकी इन शिकायतों को सुना और उनके हृदय से उठने वाली भावनाओं को जानकर उनके बीच जहरीले सर्प भेजे और उन्हें दण्ड दिया। मूसा की मध्यस्थता की प्रार्थना के बाद, परमेश्वर ने मूसा से एक पीतल का सांप बनाकर एक खम्बे पर टांग देने के लिए कहा ताकि हर कोई जन उसे देख सके। परमेश्वर ने कहा कि जब किसी को कोई सांप डंस ले और वह इस पीपल के सांप की ओर दृष्टि करे तो वह मरेगा नहीं वरन जीवित रहेगा। परन्तु यदि कोई परमेश्वर के वचनों पर विश्वास करने और पीतल के सापं की ओर दृष्टि करने से इनकार कर दे तो वह निश्चस ही मर जाएगा। परमेश्वर ने यह मांग रखी कि पापियों को विश्वास करके उसके वचनों पर विश्वास करना चाहिए।

(2) यूहन्ना 3:14-16

नये नियम में,यीशु मसीह ने इस दृष्टान्त का अर्थ बताया। वह पीतल का सर्प जिसे उस खम्बे पर लटकाया गया था,वह यीशु मसीह का प्रतीक था, जो बाद में क्रूस पर लटकाया गया था। यीशु मसीह का क्रूस पर लटकाया जाना पुराने नियम की भविष्यवाणी का पूरा किया जाना था। जो कोई यीशु मसीह पर विश्वास करेगा वह नाश न होगा परन्तु अनन्त जीवन पाएगा।

2.यशायाह 52:13-53:12 यीशु मसीह की मृत्यु के सन्दर्भ में पुराने नियम की एक महत्वपूर्ण भविष्यद्वाणी है।

पुराने नियम में मसीह से सम्बन्धित भविष्यवाणी। मैनुएल 5, परिशिष्ट 1।

(3) पुराने नियम में यीशु मसीह की मृत्यु से सम्बन्धित अन्य महत्वपूर्ण भविष्यद्वाणियां।

(1) जर्कयाह 11:12-13

520ईसा.पूर्व में ही गयी यह भविष्यवाणी यीशु मसीह से विश्वासघात किये जाने के दाम के बारे में बताती है,और बताती है कि यहूदा ने उस पैसा का क्या किया और वह धन अन्ततः किस काम के लिए इस्तेमाल किया गया (मत्ती 26:14-16;27:3-10)

(2) जर्कयाह 12:10

यह एक सैनिक के बारे में की गयी भविष्यवाणी है जो यीशु की पसलियों में भाला घोपेगा। यूहन्ना ने देखा कि किस प्रकार उस सैनिक ने भाला 'घोपा' (यूहन्ना 19:34-37)।

(3) भजन 22 और भजन 69:20-21

ये भविष्यद्वाणियां 1000 ईसा पूर्व हुई थीं जिनमें यीशु की तकलीफों का वर्णन किया गया था। दुष्ट लोग उसे क्रूस पर चढ़ाएगें(भजन 22:16;यूहन्ना 19:16-18)। लोग उसके कपड़ों को आपस में बाटेंगे ओर चिट्ठियां डालेगें(भजन 22:18;यूहन्ना 19:23-24)। बुरे लोग उसे चारों ओर से घेर लेगें और उसका तिरस्कार करेगें,उसे तुच्छ जानेंगे, उसका मज़ाक बनाऐगें और उसकी बेइज्जती करेगें(भजन 22:6-7;मत्ती 27:39-44)। उसे भयंकर प्यास लगेगी (भजन 22:15;यूहन्ना 19:28)। और उसे परमेश्वर द्वारा अनाथों सा छोड़े जाने का सताव या दु:ख सहना पड़ेगा। (भजन 22:1;मत्ती 27:46)

(4) भजन 31:5

यह भविष्यद्वाणी यीशु मसीह द्वारा कहे गये अन्तिम वचनों के बारे में बताती है(लूका 23:46)

(5) भजन 40:6-8

यह भविष्यद्वाणी यीशु मसीह की देह द्वारा दिये गये निर्णायक बलिदान के बारे में है, जिसने परमेश्वर की इच्छा से जानवरों की बलि को प्रतिस्थापित व पूरिपूर्ण किया, अर्थात एकमात्र बलिदान जो विश्वासियों को शुद्ध करता है(इब्रानियों 10:5-10)

ख.यीशु मसीह की मृत्यु के इर्द गिर्द होने वाली घटनाएं

1.मसीह की मृत्यु से सम्बन्धित नये नियम में पायी जाने वाली भविष्यद्वाणियां

(1) यीशु मसीह ने स्वयं अपनी मृत्यु के बारे में कम से कम तीन बार पहले ही बता दिया था।

पढ़ें मत्ती 16:21;मत्ती 17:22-23;मत्ती 20:18-19

यीशु की मृत्यु से पहले कम से कम तीन बार परमेश्वर ने यह भविष्यद्वाणी कर दी थी कि वह मरेगा और तीसरे दिन मुर्दो में से जीवित हो जाएगा। अत: मरकुस रचित सुसमाचार में लिखा है(44-46 ईसा पूर्व)जो लूका रचित सुसमाचार से लगभग 14वर्ष पहले लिखा गया था(60-61ईसा पूर्व)। कि उसने स्पष्ट रूप में भविष्यवाणी कर दी थी कि उसके साथ क्या क्या

होगा,कौन उसके साथ क्या करेगा,ये बातें कब घटेगीं और ये घटनाएं कहां घटेंगी। उसे यरूशलेम के अगुवों द्वारा पकड़वाया जाएगा(अर्थात महायजकों व सदूकियों द्वारा) वे उस पर मृत्यु दण्ड दिये जाने वाला आरोप लगाएंगे और रोमी शासकों के हाथों में सौंप देंगे। वे लोग उसका मजाक बनाएगें, उसे सताएंगे, उस पर थूकेगें और उसे मार डालेगें;लेकिन तीन दिन के बाद वह मुर्दों में से जी उठेगा। यीशु मसीह ने भविष्यद्वाणी की कि जो कुछ उसके बारे में पुराने नियम में लिखा गया है (अर्थात उसकी मृत्यु व उसके पुनरूत्थान के बारे में) वह ज़रूर पूरा होगा, क्योंकि यह परमेश्वर की उद्धार की योजना का एक हिस्सा हैं क्योंकि ऐसा पुराने नियम में लिखा था और पापों के लिए प्रायश्चित करने का एकमात्र तरीका था।

हर एक चीज़ ठीक उसी तरह हुई जैसे पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं और यीशु मसीह ने अपने बारे में भविष्यद्वाणी की थी। कोई भी व्यक्ति जो स्वयं 'स्वयं' भविष्यद्वक्ता' होने का दावा करता है यीशु मसीह की बराबरी नहीं कर सकता। मानवीय इतिहास में कोई जन नहीं हुआ है जिसने इतना सटीक अनुमान लगाया हो। यीशु को वास्तव में क्रूस की द्वारा मारा गया और वह वास्तव में भविष्यद्वाणी के अनुसार तीसरे दिन मुर्दो में से जीवन उठा। मानवीय इतिहास में कोई भी व्यक्ति जिसने खुद को भविष्यद्वक्ता होने का दावा किया हो मुर्दो में से जीवित नही हुआ। किसी भी धर्म के सभी नबी या भविष्यद्वक्ता आज कर्बो में विश्राम कर रहे हैं। यीशु मसीह ही एकमात्र भविष्यद्वक्ता है जो मुर्दों में से जिन्दा हुआ। यीशु मसीह ही भूतकाल के भविष्यद्वक्ताओं में से इकलौता ऐसा भविष्यद्वक्ता है जो आज भी जीवित है। ये सारे तथ्य प्रदर्शित करते हैं कि यीशु मसीह न केवल सर्वकालीन सर्वश्रेष्ठ भविष्यद्वक्ता है वरन वह एक भविष्यद्वक्ता से कहीं अधिक बढ़कर है।

2. यीशु का पकड़वाया जाना, गिरफ्तार होना और उस पर नालिश होना।

चारों सुसमाचारों में हम पढ़ते हैं कि कैस यहूदा ने मात्र चांदी के तीस सिक्कों के लिए यीशु मसीह को पकड़वा दिया। गतसमनी के बगीचे में प्रार्थना के तुरन्त बाद, सिपाहियों ने यीशु का गिरफ्तार कर लिया।

(1) यहूदियों के सामने तीन बार आरोप लगाना

पढ़ें यूहन्ना 18:12-14,19-24;मत्ती 26:57-68;लूका 22:66-71

मध्यरात्रि और शुक्रवार की सुबह,यीशु को हन्ना के समक्ष पेश किया गया, जो काइफा का ससुर था। उसके बाद उस वर्ष के महायाजक काइफा के सामने उसे पेश किया गया। और अन्त में सारे यहूदी नेता सिन्हेद्रिन में जमा हुए उस पर आरोप लगाने लगे।

(2) अन्यजातियों के समक्ष तीन बार आरोप लगाया जाना

पढ़ें लूका 23:1-25;यूहन्ना 18:28-40

शुक्रवार भोर होने से पहले, पिलातुस ने,जो यहूदा का रोमन शासक था, पहले यीशु से प्रश्नोत्तर किये। उसके पश्चात राजा हेराद,गलील के रोमी शासक ने उससे पूछताछ कीं और अन्त में पिलातुस ने पुन: उससे पूछताछ करने के बाद में उसे मृत्यु दण्ड दे दिया।

यीशु पर यहूदी व गैर यहूदी दोनों द्वारा आरोप लगाये गये,वह दोषी ठहराया व अस्वीकृत किया गया। वह जगत के धार्मिक व सरकारी अधिकारियों द्वारा दोषी ठहराया और मारा गया। उसके बावजूद भी वह निष्कलंक था।

3. यीशु का क्रूसीकरण।

पढ़ें लूका 23:26-56;यूहन्ना 19:16-4

निसान के महिने में(सम्भवत: अप्रैल में) शुक्रवार की सुबह लगभग 9 बजे,यीशु को 'खोपड़ी'नामक पहाड़ी पर क्रूस दी गयी। सैनिकों ने उसके दोनों हाथों और पैरों को लोहे की लम्बी कीलों द्वारा लकड़ी की बनी क्रूस पर ठोक दिया(भजन 22:16;लूका 24:39-40; यूहन्ना 20:25)। उसके बाद उन्होंने उस क्रूस को उठाकर एक गडढे में खड़ा कर दिया। घण्टों तक वह हाथों और पैरों में गढ़ी कीलों के सहारे लटका रहा। क्रूस द्वारा दण्ड दिया जाना सबसे खतरनाक व दर्दनाक मृत्यु दण्ड का तरीका था। हर एक बार सांस लेते समय उसे अपने बदन को ऊपर की ओर खींचना पड़ता था ताकि उसका दम न निकल जाए। क्रूस की सजा मिलने पर दोषी दर्द, थकान और दम घुटने की वजह से मर जाता था। लेकिन यीशु अपने घावों या किसी के द्वारा उसकी हत्या किये जाने की वजह से नहीं मरा। वरन उसने स्वेच्छा से अपने आप को मौत के हवाले कर दिया (यूहन्ना 10:18)।

रोमियों की यह रीति थी कि वे दोषी व्यक्ति का अपराध एक तख्ती पर लिखकर उसे क्रूस पर दोषी के सिर के ऊपर ठोक दिया करते थे। क्योंकि पिलातुस उसमें कोई दोष नहीं ढूँढ़ पाया था उसने तख्ती पर लिखवाया "यह यीशु है,यहूदियों का राजा"। सैनिकों ने उसके कपड़ों पर चिटिठ्यां डाली और उन्हें आपस में बांट लिया। उसके पास से गुज़रने वाले यहूदियों और अन्य लोगों ने उसका मज़ाक बनाते हुए उससे कहा कि वह अगर सच में सामर्थी है तो क्रूस से नीचे उतर कर अपने आप को बचा ले। यीशु के साथ साथ दो डाकुओं को भी क्रूस पर चढ़ाया गया, दोनों उसके एक एक अलंग पर लटकाये गये और वह बीचोबीच था(यूहन्ना 19:18)।

क्रूस से यीशु ने उसे घात करने वाले लोगों को क्षमा किया(लूका 23:34)। दोपहर 12 बजे से लेकर 3 बजे तक पूरे देश में अन्धकार छा गया। अन्त में उसने अपनी मानवीय आत्मा को स्वर्गीय पिता के हाथों में सौंप दिया(लूका 23:46)। जब यीशु मरा तो मन्दिर का पर्दा ऊपर से लेकर नीचे तक फट गया(मत्ती 27:51)।

यह घटना दर्शाती है कि उसकी मृत्यु के द्वारा यीशु ने सिर्फ मन्दिर में आराधना करने (अर्थात धार्मिक इमारत के)तथा लोगों द्वारा चढ़ाये जाने वाली पशुबलियों के महत्व को खत्म कर दिया। कोई धार्मिक स्थल या रीति रिवाज लोगों को उनके पापों से छुटकारा नहीं प्रदान कर सकते।

4.यीशु की मृत्यु के प्रति अनेकों प्रतिउत्तर।

शुक्रवार के दिन यीशु की मृत्यु की घटना में बहुत से लोग जुड़े हुए थे। अनेकों प्रकार के लोग यीशु की क्रूस के चारों ओर खड़े हुए थे। लेकिन हर एक जन का यीशु की मृत्यु के प्रति अपना व्यक्तिगत प्रतिउत्तर था।

खोजें व चर्चा करें। यीशु और उसकी मृत्यु के बारे में लोगों ने किस प्रकार प्रतिउत्तर दिये?

टिप्पणियां।

(1) यहूदा(यीशु का पकड़ने वाला) दिखाता था कि वह यीशु मसीह का चेला है मगर उसने यीशु को पकड़वाया। उसके बाद उसके पास पश्चाताप करने का कोई अवसर नहीं रहा(2 कुरिन्थियों 7:10-11)। उसने मन्दिर में जाकर तीन चांदी के सिक्कों को वापस कर दिया और खुद फाँसी लगा ली।(मत्ती 27:3-5; इब्रानियों 6:5-6)

(2) पतरस को अपने ऊपर बहुत घमण्ड था कि वह तो यीशु के साथ मरने को भी तैयार है,लेकिन उसने यीशु का तीन बार इनकार किया। (यूहन्ना 13:36-38;यूहन्ना 18:15-18,25-27)

(3) यूहन्ना डर के मारे उसे छोड़कर भाग गया,लेकिन बाद में प्रेम के कारण यीशु के पीछे पीछे चलता रहा, लेकिन नालिश वह उससे दूरी बनाये रहा(मत्ती 26:56;यूहन्ना 18:15)।

(4) हन्ना प्रथम न्यायी, जिसने बिना किसी सच्चे साक्षी के मुकदमा कर दिया, जो पुराने नियम के व्यवस्था के अनुसार ज़रूरी था(व्यवस्थाविवरण 17:6)। उसने सच्चाई को नजरअन्दाज़ किया। उसे "सत्य" से बढ़कर यीशु पर अपनी "सफलता" को लेकर अधिक रूचि थी। इसी कारण उसने यीशु ने उसके चेलों और शिक्षाओं के बारे में ऐसे प्रश्न किया जैसे कि उसके बारे में कोई जानता ही न हो। लेकिन यीशु ने अपने विरूद्ध साक्षी देने से इनकार कर दिया। यीशु ने कहा की उसने सदा खुले रूप में उपदेश दिये हैं और सभी लोग उसकी शिक्षाओं को सुना करते थे। यह कदम सिन्हेद्रीन के षड़यन्त्र के विरूद्ध साबित हुआ(यूहन्ना 18:12-14,19-24)

(5) काइफा, उसका दूसरा न्यायी,उसने जल्दबाजी में पेशी करवा दी और उसमें झूठे गवाहों का इस्तेमाल करके यह दिखाने का प्रयास किया गया कि उसने सारी नियमों को पालन किया है। उसने अपने आपको धर्मी न्यायी दिखाने का प्रयास किया,लेकिन उस जांच पड़ताल का परिणाम तो पहले ही निर्धारित किया जा चुका था। प्रमुख याजक और फरीसियों ने उसे पहले ही घात करने की योजना बना ली थी। लेकिन उसे मारने के लिए, यहूदी सिन्हेद्रिन को पहले उसे दोषी साबित करना जरूरी था। (मत्ती 12:14; लूका 22:2;यूहन्ना 11:49-53,57;यूहन्ना 18:14; मत्ती 26-57-68)।

(6)सिन्हेद्रिन , तीसरा न्यायी, इस्राएल के राजनैतिक व धार्मिक नेताओं से मिलकर बना एक दल था जिन्होंने एक झूठी आधिकारिक परीक्षण का आयोजन किया। वे लोगों पर यीशु के प्रभाव को देखकर जले हुए थे। इस सरकारी अदालत में उन्होंने उस निर्णय को लागू करने का प्रयास किया जिसका उन्होने पहले ही षड़यन्त्र रच लिया था(मत्ती 12:14)। उन्होंने हमेशा यीशु को मारने का असली कारण छुपा रखा(जलन, मत्ती 27:18)। सिन्हेद्रिन में उन्होंने यीशु पर ईश निन्दा का आरोप लगाया,परन्तु रोमी गर्वनर के सामने उन्होने सत्ता पलट करने का आरोप लगाया (लूका 22:66-71; लूका 23:1-2)।

(7)पिलातुस, उसका चौथा न्यायी था,उसने भी अनुचित परीक्षण किया। हालांकि वह पूरी तरह से निरूत्तर था कि यीशु निर्दोष है, फिर भी उसने यीशु को क्रूस पर चढ़ाये जाने के लिए लोगों के हाथों में छोड़ दिया। उसने स्वार्थी बनकर काम किया,क्योंकि वह अपने पद को खोने से डरता था। (मत्ती 27:11-26;यूहन्ना 18:28-19:16)।

(8) राजा हेरोद, उसका पांचवा न्यायी था, वह केवल यीशु द्वारा मनोरजंन प्राप्त करना चाहता था। वह आशा करता था कि यीशु कोई अदभुत चमत्कार करें। जब यीशु पूरी तरह से खामोश रहे,तब उसने अपने सैनिकों के साथ मिलकर यीशु का उपहास व मजाक बना सका (लूका 23:5-12)।

(9) यरूशलेम की स्त्रियां, कुछ स्त्रियां जो उसके साथ साथ चल रही थी उसके लिए रोती व विलाप करती थी। उन्होने उसकी अवस्था को देखकर उस पर तरस खाया लेकिन उन्हें अपनी दशा का अन्दाजा नहीं था। उन्हें इस बात का अन्दाजा नहीं था कि यीशु का भविष्य तो सुरक्षित है, और न ही वे यह जानते थे कि जब तक वे पश्चाताप न करें तब तक वे और उनके बच्चे सुरक्षित नहीं हैं। यरूशलेम के लोागों मे से ज्याादातर लोग जिद्दी थे। अत: यरूशलेम वाली अगर न फिरें तो उनके लिए कोई आशा नहीं थी(लूका 23:27-31)

(10) सैनिक, जिन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ाया, उन्होंने केवल आदेशों का पालन किया और वे सोचते थे कि वे तो बस उन्हें मिले आदेश को पूरा कर रहे हैं। लेकिन उन्होंने अपनी जिम्मेदारियों से एक कदम आगे बढ़कर बढ़ी क्रूरता के साथ यीशु को मारा पीटा और उसका मजाक बनाया(मत्ती 27:27-31)।

(11) साधारण लोग,यहूदी तथा अन्य लोगों ने आते जाते सिर *हिला हिला कर उसकी निन्दा की*(मत्ती 27:39)।

(12) एक डाकू ने भी यीशु की निन्दा की,लेकिन दूसरे डाकू ने अपने पापों का अंगीकार किया और अपने आपको यीशु के हाथों में सौंप दिया (लूका 23:39-43)।

(13) सुबेदार, जो रामी सैनिकों का सेनापति था, यीशु का परमेश्वर का पुत्र कहने वाला पहला व्यक्ति था। (मत्ती 27:54)।

(14) अरिमतिया का युसुफ और निकेदुमुस, जो गुप्त में यीशु को माना करते थे, अब खुलेआम आगे आकर उसकी सेवा करने लगे। उन्होंने ही यीशु की देह को क्रूस से उतारा और उसे खाली कब्र में रखा(यूहन्ना 19:38-42)

(15) आज संसार का हर व्यक्ति यीशु के क्रूस के सामने खड़ा होता है। वह उस पर विश्वास करने वालों के पापों का पश्चाताप करने के लिए मरा और उन्हें क्षमा प्रदान की। परमेश्वर चाहते हैं कि हर एक जन यह जाने कि यीशु कौन है और उसने हमारे लिए क्या किया हैं। आप और मैं भी यीशु के क्रूस के सम्मुख खड़े होते हैं। यीशु व उसकी क्रूस की मृत्यु के प्रति आपका प्रतिउत्तर क्या होगा? क्या आप यीशु को छोड़कर भाग जाएंगे या उसका अनुसरण करेगें? क्या आप अपने आपको धार्मिक ठहराने की कोशिश करेगें या अपने पापों का अंगीकार करेगें? क्या आप झूठ मूठ यह दर्शाना चाहते हैं कि आपको कुछ नहीं पता या फिर आप इस बात को मानते हैं कि यीशु क्रूस पर आपके बदले मरा? क्या आप यीशु मसीह व मसीहियों को सताना जारी रखेगें या फिर खुले आम प्रेम के साथ उसकी सेवा करेगें? क्या आप अविश्वास करके उसे अस्वीकृत करेगें या विश्वास के साथ उसे स्वीकार करेगें?

आपका प्रतिउत्तर क्या होगा?

ग.हमारे लिए यीशु की मृत्यु का अभिप्राय।

1.पहला कारण: यीशु मसीह पापों का पश्चाताप करने के लिए मरे।

पढ़ें रोमियों 3:23-25; रोमियों 8:7-10; यूहन्ना 6:35-44।

सबसे पहले मसीह हमारे लिए और हमारे पापों के बदले इसलिए मरा ताकि वह हमारे पापों को प्रायश्चित कर सके। उसे हमें परमेश्वर पिता की नज़रों में धर्मी ठहराकर उससे हमारा मेल करवा दिया। मानवीय स्वभाव से कोई भी मनुष्य परमेश्वर को प्रसन्न, उसके प्रति समर्पण नहीं करता या उसके पास नहीं आता।

जब मानवजाति अपनी स्वाभाविक अवस्था में थी, परमेश्वर ने हमारे लिए उद्धार का एक रास्ता तैयार किया। यीशु मसीह ने क्रूस(शाब्दिक अर्थ: उसके लहू के द्वारा) पर अपनी मृत्यु के द्वारा सार्वजनिक तौर पर खुद को प्रायश्चित[1] के बलिदान के रूप में प्रगट किया(खुलेआम प्रदर्शित किया, दिया,तैयार किया) (यूनानी भाषा में: प्रोटीथिमी),जिसे विश्वास के द्वारा स्वीकार किया जाना है(रोमियों 3:25)[2]।(परमेश्वर की सहनशीलता में पुरखाओं के समय से(ग्रीक: प्रोगीनोमाई) किये जाने वाले पापों को क्षमा (ग्रीक : पेरिस)करने के द्वार उसने अपने न्याय को प्रगट किया) यीशु हमारे पापों के दण्ड के रूप में मरा, अर्थात प्रायश्चित के लिए क्रूस पर किया गया बलिदान हमें परमेश्वर की नज़रों में धर्मी ठहराने के लिए एक उपाय बना। यीशु ने हमारे पापों के कारण हमारे प्रति उठे परमेश्वर के पवित्र व धार्मिक क्रोध को दूर करके परमेश्वर के साथ हमारा मेल मिलाप करवा दिया। "मेल मिलाप"[3] का यहां पर अर्थ हैं परमेश्वर के साथ टूटे हुए रिश्ते को बहाल करना।

2. दूसरा कारण: यीशु मसीह हमें व्यवस्था के श्राप से मुक्त करने के लिए मरा।

पढ़ें निर्गमन 20:1-2; गलातियों 2:21; गलातियों 3:10-29।

दूसरा कारण जिसके लिए यीशु हमारे बदले मरा, हमें व्यवस्था से मुक्त करना था। वह हमे धर्मी ठहराये जाने के उपाय के रूप में परमेश्वर की धार्मिक मांगों(व्यवस्था)से और हमारे विरूद्ध सारे नियमों से(जिन्हें मनुष्यों ने बनाया है)मुक्त करता है। पुराने नियम में "व्यवस्था" कभी धर्मी ठहराये जाने (उद्धार) का उपाय नहीं था। परमेश्वर द्वारा अपने लोगों को बचा लेने के बाद(मिस्र की गुलामी से),उसने बचे हुए लोगों को व्यवस्था के रूप में दस आज्ञाएं दी। परमेश्वर ने दस आज्ञाएं इस मनसा से नहीं दी थी लोग खुद को उसके आधार पर धर्मी ठहराएं, लेकिन ऐसे दैनिक नियमों के तौर पर दिये कि बचे हुए लोग(विश्वासी) उनके अनुसार अपना जीवन व्यतीत करें। नैतिक नियम (दस आज्ञाएं) लोगों को सिखाते हैं कि उन्हें इस संसार में कैसे परमेश्वर के बचाए हुए लोगों के समान रहना चाहिए या वे रह सकते हैं(निर्गमन 20:1-2)। इन नैतिक नियमों की पुष्टि नये नियमों में होती है(मत्ती 22:36-40)। आनुष्ठानिक नियम पुराने के नियम के लोगों को सिखाते हैं कि वे किस तरह आराधना ओर सेवा के लिए परमेश्वर के पास जा सकते हैं।

---

1 ग्रीक : हिलेस्टेरियन, प्रायश्चित

2 25-26 वचन का अनुवाद। "परमेश्वर ने यीशु मसीह को उसके लहू बहाये जाने के द्वारा क्रोध शान्त करने वाला बलिदान बनाया(सार्वजनिक तौर पर प्रगट किया), जो की विश्वास के द्वारा क्रियाशील होता है।
3 ग्रीक : काटालाएज, मेल मिलाप

आनुष्ठानिक नियम(अर्थात याजकों और लेवियों,तम्बू व मन्दिर, सबत तथा पर्वों और खतना और बलिदानों के,शुद्धिकरण की रीति व भेटों के सम्बन्ध में) वे "वास्तविकता की छाया" थी जो बाद में यीशु में प्रमाणित हुई(कुलु 2:17;इब्रा 10:1)। यीशु ने आकर उन आनुष्ठानिक नियमों को पूरा किया ,रद्द किया और मिटा दिया।

दुर्भाग्यवश, बेबिलोन से निर्वासन के बाद से यहूदी धार्मिक अगुवों और शिक्षकों ने व्यवस्था का उद्देश्य बदल दिया और व्यवस्था को ही प्रायश्चित करने व उद्धार का एक माध्यम बना दिया(प्रेरितों 15:1)। उसके बाद से "धर्मशास्त्र पर विश्वास करने वाले लोगो"(उदा. यहूदी,मुसलिम और रीतिरिवाजों पर चलन वाले मसीही) ने व्यवस्था पालन करने के द्वारा खुद को बचाने(धर्मी ठहराने) का प्रयास किया।

लेकिन बाइबल चेतावनी देती है कि, " जितने लोग व्यवस्था के कामों पर भरोसा रखते हैं वे सब श्राप के आधीन हैं, क्योंकि लिखा है कि जो कोई व्यवस्था की पुस्तक में लिखी हुई सब बातों के करने में स्थिर नहीं रहता वह श्रापित हैं। यह बात प्रगट है कि व्यवस्था के द्वारा परमेश्वर के यहां कोई धर्मी नहीं ठहरता"(गलातियों 3:10-11)। यीशु मसीह ने जो हमारे लिये श्रापित बना,हमें मोल लेकर व्यवस्था के स्राप से छुड़ाया क्योंकि लिखा है जो कोई काठ पर लटकाया जाता है वह श्रापित है। हम व्यवस्था के श्राप से बचे हैं। अब हम "व्यवस्था के अधीन नहीं" वरन "अनुग्रह के अधीन" है। (रोमियों 6:14)।

3. तीसरा कारणः यीशु मसीह यहूदियों का गैर यहूदी विश्वासियों के बीच मतभेद को नाश करने के लिए मरे।

पढ़ें मत्ती 5:17; इफिसियों 2:13-18; कुलु 2:14

तीसरा कारण जिसके लिए यीशु मरा, इस्राएलियों और अन्याजियों में आये विश्वासियों के बीच मतभेद को दूर करना। उसने दो समूहों को लोगों को परमेश्वर के नये लोगों में शामिल कर दिया(अर्थात कलीसिया में) और इस तरह से सारे जगत के सभी जातियों से आये विश्वासियों में शान्ति कायम हो गयी। इस्राएल देश के अस्तित्व में आने से बहुत पहले ही परमेश्वर ने यह वायदा किया था कि संसार की सारी जातियां अब्राहम के "वंश" अर्थात आने वाले, यीशु मसीह में होकर आशीष पाएंगे(उत्प 22:18)। फिर भी, यीशु मसीह के प्रथम आगमन तक,"व्यवस्था इस्राएल तथा अन्य जातियों के बीच में एक अवरोधक या विभाजित करनेवाली शत्रुता की दीवार के समान खड़ी हो गयी।" विशेषकर के आनुष्ठानिक नियमों के क्षेत्र में जिसमें पवित्र लोगों,पवित्र स्थान, पवित्र समय और पवित्र कामों, और इस्राएल को बाकि सारे देशो अलग दिखाया जाता था। इस्राएल के लिए परमेश्वर का विशेष उद्देश्य बाकि सारे गैर यहूदी देशों को इस्राएल की "व्यवस्था के जुए की नीचे" लाना नहीं था, वरन परमश्वेर वह सारे राष्ट्रों के लिए इस्राएल से एक उद्धारकर्ता उत्पन्न करना चाहता थ। जब उद्धारकर्ता यीशु आया तो उसने आकार व्यवस्था की सभी धार्मिक मांगों को अपने जीवन व अपनी मृत्यु से पूरा कर दिया(मत्ती 5:17)। अतः उसने परमेश्वर के पास पहुचने के लिए आनुष्ठानिक व्यवस्था को एक माध्यम मानने से इनकार(कुलु. 2:14) व उसे समाप्त (इफि 1:14-!5)। उसने परमेश्वर के राज्य की शिक्षाओं के द्वारा इस्राएल के नागरिक कानूनों को बदल दिया।

यीशु मसीह की मृत्यु ने "बाधा व शत्रुता की दीवार को तोड़ दिया" और यहूदी तथा गैर यहूदी विश्वासियों का परमेश्वर के साथ मेल मिलाप करवा दिया। उसने यहूदी और गैर यहूदी विश्वासियों को :

- मिलाकर एक परमेश्वर का राज्य बना दिया(मत्ती 21:42-440
- एक चरवाहे की भेड़ों का झुण्ड बना दिया(यूनना 19:16)
- एक देह (कलीसिया) का हिस्सा बना दिया(1कुरि 12:13)
- एक ऐसा आत्मिक मनुष्य बना दिया जिसकी आत्मा के द्वारा परमश्वेर पिता तक जान पहुंच है। (इफि 2:15-18)
- परमेश्वर के घराने का एक हिस्सा बना दिया जिसका एक भाग परमेश्वर भी है(इफि 2:15-18)
- परमेश्वर का एक चुना राष्ट्र बना दिया(1पतरस 2:9-10)

परमेश्वर ने हम में (यहूदियों मे से विश्वासियों) और उनमें (अन्यजातियों में से विश्वासियों) में को अन्तर नहीं बनाया है (प्रेरितों 15:9)! "यहूदियों और यूनानियों में कुछ भेद नहीं, इसलिये कि वह सब का प्रभु है; और अपने सब नाम लेने वालें के लिए उदार है!

4.चौथा कारणः यीशु जीवन का मकसद देने के लिए मरा।

पढ़ें रोमियों 14:8; 2 कुरिन्थियों 5:15; फिलिप्पियों 2:1-8।

चौथा कारण जिसके तहत यीशु हमारे लिए और हमारे बदले मरा वह मसीहियों को उनके जीवन का मकसद प्रदान करना था। मसीही लोग अपने लिए जीवन नहीं जीते वरन वे बाइबल के परमेश्वर के लिए जीवन व्यतीत करते और दूसरे लोगों की सेवा निस्वार्थ भावना से करते हैं।

5. पांचवां कारण: यीशु मसीह सारे भय को दूर करने के लिए मरा।

पढ़ें इब्रानियों 2:14-15; रोमियों 8:31-39।

पांचवा कारण जिसके तहत यीशु हमारे लिए और हमारे बदले मरा वह यह था कि वह सारे भय को हटाकर मसीहीयों को कठिन परिस्थितियों के बावजूद अनन्त जीवन का निश्चय प्रदान करना चाहता था। परमेश्वर हमारी ओर है तो कौन सी परिस्थिति हमारे विरूद्ध हो सकती है(रोमियों 8:31)! कोई भी चीज़ हमें परमेश्वर के प्रेम से अलग नहीं कर सकती(रोमियों 8:38-39)! यीशु मसीह सभी लोगों के भय के दूर करने के लिए मरा अर्थात परिस्थितियों का भय,शैतान का भय और मसीहियों के जीवन से हमेशा के लिए मृत्यु का भय।

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***[प्रतिक्रियाएं]*** **दूसरों के लिए प्रार्थना करें**

अपनी बारी आने पर आपने जो कुछ आपने सीखा है *उसके प्रतिउत्तर के रूप में समूह में प्रार्थना करें।*
या समूह को दो या तीन भागों में बांट लें और आज प्राप्त शिक्षाओं के प्रतिउत्तर के रूप में परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	**[निर्धारित कार्य] अगले अध्याय के लिए**

(समूह के अगुवे. समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।)

1. समर्पण : चेले बनाने तथा मसीह की कलीसिया की स्थापना करने के प्रति समर्पित हों

2."गुड-फ्राइडे-यीशु मसीह की मृत्यु का स्मरणोत्सव मनाने के बारें में "-किसी दूसरे व्यक्ति या समूह को -प्रचार करें,शिक्षा दें या बाइबल अध्ययन पर ध्यान लगाएं।

3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। **मरकुस 11:20-14:72** में से आधे अध्याय पर एकान्त में मनन करें। पसन्द आने वाले विचार को लिखने के तरीके का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।

4.याद करें। **(4) विश्वास: रोमियों 4:20-21।** रोज कम से कम 5 उन बाइबल आयतों को दोहराए जिन्हें आपने पहले याद किया था।

5. बाइबल अध्ययन। घर पर ही अगली बाइबल अध्ययन की तैयारी करें। **यूहन्ना 1:1-18।** पांच कदमों द्वारा बाइबल अध्ययन करने के तरीके का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।

6. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।

7.मसीह की कलीसिया बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें । जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।